इन धनी के बान मोको

इन धनी के बान मोको ना लगे।
मोको ना लगे, कहा कियो करम अधम।
तो भी इस्क न आया मोको, ए कैसा हुआ जुलम।।

रंचक इसारत धनी की, जो पावे आसिक जिउ।
सो जीव खिन एक लों, रहे ना सके बिना पिउ।।

धनिएँ हेत करके मुझको, कई विध दई समझाए ।
साख सास्त्र सब सब्द, मोहे बिध बिध दई जगाए।।

तो भी प्रेम न उपज्या, धनी कर कर थके सनेह।
ढीठ निपट निठुर भई, धनी क्योंए न सके ले।।

आप जैसी कर बैठाई, तो भी प्रेम न उपज्या इत।
सो रोवत हों अन्दर, फेर फेर जीव बिलखत।।

मेहेबूब ऐसी मैं क्यों भई, ले प्रेम न खड़ी हुई।
महामत दुष्टाई क्यों करी, ले विरहा मांहें ना मुई।।